

# बी. वी कारन्त द्वारा अनूदित गिरीश कारनाड का मूल कन्नड़ नाटकहयवदन:1971

अजिता कुमारी के डी<sup>1\*</sup>, डॉ. जयलक्ष्मी पाटिल<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थि, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड

<sup>2</sup> सहायक प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड

सार - पूर्ण की अपूर्णता (मनुष्य की अपूर्णता) को विभिन्न काल-खंडों में रखकर अनेक नाटक लिखे गए हैं। 'हयवदन' की उपकथा में मनुष्य को पूर्ण मनुष्य होने से आरम्भ होकर-शरीर और मस्तिष्क, दोनों की श्रेष्ठता की कामना मुख्य कथा में प्रदर्शित की जाती है। स्त्री-पुरुष के आधे-अधूरेपन की त्रासादी और उनके उलझावपूर्ण संबंधों की अबूझ पहली को देखने-दिखानेवाले नाटक तो समकालीन भारतीय रंग-परिदृश्य में और भी हैं; लेकिन जहाँ तक संपूर्णता की अंतहीन तलाश की असह्य यातनापूर्ण परिणति तथा बुद्धि और देह के सनातन महत्ता-संघर्ष के परिणाम का प्रश्न है गिरीश कारनाड का हयवदन, कई दृष्टियों से, निश्चय ही एक अनूठा नाट्य-प्रयोग है। नाटक की शुरुआत में भगवत नाम का एक पात्र मंच पर आता है जो कि इस नाटक का कथावाचक भी है, वह गणेश पूजा के माध्यम से इस नाटक के सफल मंचन की कामना करता है।

कुंजी शब्द -मनोस्थिति, अभिवादन, सांत्वना, झुरझुरी, परिप्रेक्ष्य, दंशकारी।

-----X-----

## पृष्ठभूमि

भगवत दर्शकों को नाटक के स्थान धर्मपुर और वहां के राजा धर्मशील से अवगत करवाता है। दर्शकों के सामने कुछ सवाल खड़े करता है मनुष्य और ईश्वर की अपूर्णता के बारे में मनुष्य के सर्व गुण सम्पूर्ण होने के बारे में। अपने सम्बोधन के दौरान वह दो नायकों का परिचय देता है जो कि परस्पर मित्र भी हैं। पहला-देवदत्त जो कि एक तेज मस्तिष्क और बुद्धि का व्यक्ति है जिसने अपने ज्ञान से राज्य के कवियों और पंडितों को भी पीछे छोड़ दिया है। और दूसरा-कपिल जो कि शारीरिक रूप से काफी शक्तिशाली है। देवदत्त एक ब्राह्मण का पुत्र है और कपिल एक लौहार का पुत्र है। देवदत्त में शारीरिक बल की कमी है तो कपिल में ज्ञान की कमी है। लेखक के अनुसार देवदत्त का सिर (मस्तिष्क का ज्ञान) और कपिल का धड़ (शारीरिक बल) मिलकर एक सम्पूर्ण पुरुष की कल्पना की जा सकती है। देवदत्त और कपिल की तुलना राम-लक्ष्मण, लव-कुश तथा कृष्ण-बलराम की जोड़ी से करता है।

इसके बाद एक अभिनेता (एक्टर-1) चीखते हुए दौड़कर भगवत की तरफ आता है और उसे बताता है कि उसने एक अजीब प्राणी

को देखा है जो इन्सान की तरह बातें करता है लेकिन उसका का सिर एक घोड़े का है और धड़ एक इंसान का। भगवत उसे नाटक के लिए तैयार होने को कहता है। वह अभिनेता मंच से चला जाता है परन्तु कुछ देर में वह मंच पर चीखता हुआ वापिस आता है और उसके पीछे वह अजीब प्राणी भी आता है। एक बार तो भगवत को लगता है कि शायद किसी ने घोड़े का नकाब पहना हुआ है, वह इसे हटाने का प्रयास करता है और फिर उसे एहसास होता है कि उसका सिर असली है।

वह सच में आधा घोड़ा है और आधा इंसान। इसके बाद वह प्राणी स्वयं का परिचय हयवदन के रूप में करता है।

## कथासार

हयवदन अपने जन्म की कहानी सुनाने लगता है। वह बताता है कि एक बार कर्नाटक राज्य की एक राजकुमारी को अपने लिए वर (पति) चुनना होता है और उसे देखने के लिए दूर-दूर से राजकुमार आते हैं। उसे एक अरबी राजकुमार के घोड़े से प्यार

हो जाता है और वह घोड़े से विवाह करने के लिए जिद करती है और उसका विवाह कर दिया जाता है।

वह घोड़ा १५ साल बाद आकाशीय प्राणी ( Celestial Being ) का रूप धारण कर लेता है लेकिन अब राजकुमारी उसे स्वीकार नहीं करती। वह आदमी (घोड़ा) राजकुमारी को घोड़ी बनने का श्राप दे देता है और वो एक घोड़ी के रूप में बदल जाती है। वह घोड़ी (राजकुमारी) हयवदन को जन्म देती है जो कि आधा आदमी है ( धड़ ) और आधा घोड़ा (सिर)। अब हयवदन इस रूप से मुक्ति प्राप्त करना चाहता है। भगवत उसे चित्रकूट के माता (देवी) काली के मंदिर में जाने के लिए कहता है और अभनेता को भी उसके साथ जाने के लिए कहता है। दोनों चले जाते हैं। भगवत नाटक की कहानी के साथ आगे बढ़ता है। मंच पर देवदत्त और कपिल आते हैं। देवदत्त एक पदमिनी नाम की स्त्री से विवाह करना चाहता है और वह इस बारे में कपिल को बताता है। देवदत्त अपनी मनोकामना पूरी होने पर मन ही मन अपना सिर देवी काली को और बाहें रुद्र को न्योछावर करने की सोचता है। कपिल पदमिनी के पास जाकर देवदत्त से विवाह का प्रस्ताव रखता है। देवदत्त और पदमिनी का विवाह हो जाता है।

समय बीतने पर देवदत्त को ये महसूस होने लगता है कि कपिल और पदमिनी परस्पर एक दूसरे की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। इस समय पदमिनी गर्भवती है। देवदत्त जान बूझकर तीनों के उज्जैन जाने के कार्यक्रम को टालने का प्रयास करता है। वह कपिल से कहता है कि पदमिनी बीमार है। लेकिन पदमिनी उसकी इच्छाओं के विपरीत कपिल के सामने यात्रा पर जाने की सहमति दे देती है। तीनों यात्रा पर निकल पड़ते हैं। पदमिनी बार बार देवदत्त के सामने कपिल की प्रशंसा करती है। कपिल पदमिनी के लिए फूल तोड़ कर लाता है। कपिल और पदमिनी दोनों रुद्र मंदिर में चले जाते हैं जबकि देवदत्त साथ जाने से मना कर देता है। वह ईर्ष्या अनुभव करता है लेकिन इसके लिए पदमिनी को दोष नहीं देता। क्योंकि कपिल का शारीरिक बल और सौन्दर्य ऐसा है कि कोई भी स्त्री उसकी ओर आकर्षित हो सकती है।

देवदत्त देवी काली के मंदिर में चला जाता है। उसे अपना प्रण याद आ जाता है। वह पदमिनी और कपिल की सदा खुश होने की कामना करते हुए तलवार से अपना सिर काटकर देवी काली के चरणों में चढ़ा देता है। इतने में कपिल और पदमिनी मंदिर से बाहर आते हैं। देवदत्त को वह न देखकर कपिल काफी चिंतित हो जाता है और पदमिनी को वहीं छोड़कर देवदत्त की तलाश में निकल जाता है।

पदमिनी को इस बात से हैरानी होती है कि कपिल को उसकी बजाय देवदत्त की ज्यादा चिंता है। कपिल को देवी काली के मंदिर में देवदत्त का सिर और धड़ मिलता है। कपिल स्वयं द्वारा

पदमिनी की तरफ आकर्षित होने को देवदत्त की मौत का कारण महसूस करता है। वह देवदत्त को अपना मित्र, भाई, गुरु और अपना सब कुछ मानता है। उसी तलवार से कपिल खुद का सिर धड़ से अलग कर देता है।

कुछ देर बाद पदमिनी भी वहां पहुँचती है। उसे कोई अंदाज़ा नहीं है कि दोनों की मौत कैसे हुई। वो स्वयं एक ऐसी स्त्री के रूप में देखती है जिसकी वजह से दो दोस्तों के बीच आपसी द्वंद हुआ और दोनों ने एक दुसरे की जान ले ली। वह भी आत्म हत्या करने का प्रयास करने लगती है तभी देवी काली प्रकट होती है और उसे ऐसा करने से रोकती है। काली उसे दोनों के सिर उनके धड़ के साथ रखकर जोड़ने के लिए कहती है ताकि वह उन्हें पुनः जीवित कर सके। काली दोनों की प्रशंसा भी करती है। जैसे ही पदमिनी उनके सिर और धड़ को जोड़ती है, काली ओझल हो जाती है।

### सिर की अदला-बदली

थोड़ी देर बाद जब पदमिनी को होश आता है तो उसे अपनी गलती का एहसास होता है कि जल्दबाजी में उसने देवदत्त और कपिल के सिरों को एक दूसरे के धड़ के साथ जोड़ दिया था। जब कपिल और देवदत्त को होश आता है तो वो भी हैरान होते हैं। अब उन दोनों की तरफ से पदमिनी पर अपना हक जताया जाता है। देवदत्तसिरजिसके साथ कपिल का धड़ है वह कहता है कि मस्तिष्क पूरे शरीर का स्वामी है, अतः पदमिनी उसी की होनी चाहिए। कपिलसिर जिसके साथ देवदत्त का धड़ जुड़ा हुआ है कहता है कि उसके शरीर देवदत्त के धड़के साथ पदमिनी रही है। अतः पदमिनी पर उसी का हक है। इतने में कथावाचक भगवत मंच पर आता है, सभी पात्र वहीं पर बुत बन जाते हैं और वह दर्शकों से सवाल करता है कि अब इस समस्या का क्या हल हो सकता है, पदमिनी पर किस का अधिकार होना चाहिए। मंच पर पर्दा गिर जाता है।

### एक्ट - II

पर्दा हटता है। दूसरे एक्ट के आरम्भ में ही कथावाचक भगवत फिर से दर्शकों से वही प्रश्न करता है। वह विक्रम और बेटाल की उस कहानी का जिक्र भी करता है जहाँ राजा विक्रम भी बेटाल को इस प्रश्न के उत्तर में यही कहता है कि मस्तिष्क (सिर) से ही पूरे एक व्यक्तित्व की पहचान होती है। भगवत बताता है कि तीनों एक ऋषि के पास समस्या के समाधान के लिए जाते हैं। ऋषि के शब्द मंच पर सुनाई देते हैं कि देवदत्त का सिर ही पदमिनी का असली स्वामी है। देवदत्त और पदमिनी खुशी से ये निर्णय स्वीकार करते हैं और कपिल को अलविदा कहते हैं। कपिल जंगल की तरफ चला जाता है।

समय बीतता है। देवदत्त कुछ गुड़ियाँ लेकर आता है। ये गुड़ियाँ भी एक तरह से कथावाचक की भूमिका निभाती हैं। देवदत्त और पदमिनी की मनोस्थिति को दर्शकों के सामने रखती हैं। वह एक कुश्ती का मुकाबला जीतने की खुश खबरी भी पदमिनी को देता है। पदमिनी एक बच्चे को जन्म देती है। देवदत्त भी धीरे धीरे अपनी शक्ति खोने लगता है। पदमिनी भी देवदत्त में रुचि खोने लगती है।

पदमिनी के कहने पर देवदत्त उज्जैन के मेले से नयी गुड़ियाँ लेने के लिए चला जाता है। भगवत फिर से मंच पर आकर कपिल के बारे में बताता है कि उसने समय के साथ पहले की तरह अपनी शारीरिक शक्ति प्राप्त कर ली है। पदमिनी जंगल में कपिल से मिलती है। जब कपिल आने का कारण पूछता है तो वह कहती है कि वह अपने बच्चे को प्रकृति का अनुभव करवाने के लिए लाई है। और यह बच्चा कपिल का भी है क्योंकि इसने कपिल के शरीर से जन्म लिया है। लेकिन कपिल उसे स्वीकार नहीं करता। थोड़े संकोच और हिचकिचाहट के बाद कपिल अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए तैयार हो जाता है।

देवदत्त पदमिनी को ढूँढता हुआ वहीं जंगल में आ जाता है। फिर से वही समस्या को देख और एक अंतिम हल के रूप में देवदत्त कपिल को तलवार के साथ ललकारता है और दोनों मारे जाते हैं। पदमिनी फिर से खुद को अकेला अनुभव करती है। तभी वहाँ भगवत आ जाता है, पदमिनी उसे बच्चा सौंप देती है और कहती है कि 5 साल बाद इसे देवदत्त के पिता ब्राह्मण विद्यासागर को सौंप देना। वह उसे देवदत्त द्वारा लाई हुई गुड़ियाँ भी पकड़ा देती है और देवदत्त व कपिल के साथ सती होने की घोषणा करके चली जाती है। भगवत पदमिनी के सन्दर्भ में अपने भाषण के साथ नाटक को खत्म करने की सोचता है, तभी मंच पर एक चीख सुनाई देती है। वही अभिनेता आकर कहता है कि उसने घोड़े को राष्ट्रीय गान और देश भक्ति के गीत गाते हुए सुना है। तभी वहाँ एक और अभिनेता आता है जिसके साथ एक लड़का है और उस लड़के के पास दो गुड़ियाँ हैं।

हयवदन मंच पर आता है। और भगवत का अभिवादन करता है। अभिनेता और भगवत हंसी मजाक में बातें करते हैं और जोर जोर से हंसने लगते हैं। वो लड़का भी हंसता है और उसके हाथ से वो गुड़ियाँ नीचे गिर जाती हैं। भगवत कहता है कि इस लड़के ने पिछले 5 साल में किसी प्रकार के सुख, दुःख या हंसी को महसूस नहीं किया। सिर्फ उसकी (हयवदन) वजह से ही उसके चेहरे पर मुस्कान है।

हयवदन अपनी कहानी सुनाने लगता है कि जब वह देवी काली के मंदिर में पहुंचा तो उसने तलवार उठा कर अपना सिर भेंट चढ़ाने

का फैसला किया। तभी देवी काली ने प्रकट होकर कहा कि तुम लोग कहीं और जाकर अपना सिर क्यूँ नहीं काटते। यदि सिर ही काटना है तो मेरे पास क्यूँ आते हो ?? देवी काली ने उस से उसकी इच्छा के बारे में पूछा और उसे पूरा कर दिया। लेकिन देवी काली ने उसकी पूरी इच्छा को नहीं सुना और उसे पूरी तरह इंसान बनाने की बजाय पूरी तरह से घोड़ा बना दिया। लेकिन फिर वो खुश है। लेकिन उसे अफसोस है कि अभी भी उसके पास इंसान की आवाज़ है। जिस कारण वह अभी भी पूरी तरह से घोड़ा नहीं बना। हयवदन कहता है कि जो लोग राष्ट्रिय गान गाते हैं उनकी आवाज़ जल्दी खत्म हो जाती है। इसीलिए वह राष्ट्रीय गान गा रहा था ताकि वह अपनी आवाज़ खो सके। हयवदन सिसकने लगता है और वो लड़का उसे सांत्वना देता है।

हयवदन उसे अपने साथ राष्ट्रीय गान गाने के लिए कहता है लेकिन उस लड़के को इसके बारे में कुछ भी नहीं पता। वह अपनी माँ पदमिनी द्वारा गाया जाने वाला गीत ही गाने लगता है जोकि थोड़ा त्रासदिक है। हयवदन हंसने की कोशिश करता है और उसकी हंसी घोड़े की आवाज़ में बदल जाती है और अब हयवदन पूरी तरह से घोड़ा बन जाता है। भगवत अभिनेता को कहता है कि वो ब्राह्मण विद्यासागर के पास जाये और कहे कि उनका पोता एक महान घोड़े पर सवार होकर आ रहा है। भगवत देवता गणेश का नाटक के सुखद अंत के लिए धन्यवाद करता है।

### निष्कर्ष

हयवदन भी गिरीश कारनाड की एक और उत्कृष्ट कृति है। इसमें भी मानव के द्वन्द्ववात्मक व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। इसकी मूल कथास्वस्तु कई आख्यानों से ली गयी है पर सारी कथा पर कारनाड की अपनी कल्पना ही अधिक काम करती दिखाई पड़ती है। कर्नाटक के बयलाटा या यक्षगान की शैली इसमें उभरकर दीखती है। कारनाड समस्याएँ तो उठाते हैं, पर उनका यल मुखौटों के द्वारा करते हैं। इसे बी.आर. नारायण ने हिन्दी में अनूदित करके हिन्दी-जगत् के लिए एक प्रसिद्ध नाटक सौंप दिया है।

साथ ही, और भी आदि स्तर पर उतरकर शरीर और मस्तिष्क के बीच जब नारी झूलती है तो क्या स्वयं मानव-कामना को इंगित नहीं करती ?

प्रकृति में जीव-क्रम के संपूर्ण विकास की सर्वोत्तम उपलब्धि इकाई मानव है- वह भी अपूर्ण है। यह त्रासदी बड़ी दंशकारी है। इसे जब आज के दैनंदिन जीवन से दूर परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने का अवसर मिलता है, तो वह दूरी ही उसे समग्र रूप में

देख पाने की सुविधा देती है- तत्काल वर्तमान में सद्यः हो रही चेतना की झुरझुरी से जोड़ देती है। आग्रह और संकोच टूट जाते हैं। कथा गाथा का रूप लेती है, क्योंकि जो कुछ उस प्रक्रिया द्वारा उस क्षण सहभोगा जा रहा है, उसमें एक गरिमा है। गाथा गाई जाती है या कही जाती है, इसी के अन्तर में गाथा और कथा का अन्तर है।

### संदर्भ स्रोत

1. हयवदन, गिरीश कारनाड , अनुवाद बी.वी.कारन्त , दसवाँ सं.२०१७.
2. <https://www.pustak.org>
3. <https://hi.m.wikipedia.org>

---

### Corresponding Author

अजिता कुमारी के डी\*

शोधार्थि, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड